आचार्य ज्ञान मुनि

बाहर के आकार : बताते विचार

हरेक मनुष्य के पास तीन प्रकार के योग होते हैं– मन, वचन और काया। इन योगों का कार्य मुख्यत: सोचना, बोलना और करना है। ये तीनों योग उसकी आत्मा को भीतर से बाहर तक जोड़ने का काम करते हैं। मन से जो भी चिन्तन किया जाता है, उसका असर वचन, काया में आए बिना नहीं रहता। इसलिए मनस्विदों ने मन को नियंत्रित करने एवं वश में करने की बात कही है। मन के नियंत्रित होने पर वचन और काया तो स्वत: ही नियंत्रित हो जाते हैं। जैन शास्त्रों में भी मन को नियंत्रित करने की बात महत्वपूर्ण रूप से प्रतिपादित की गई है। मन भीतर में है जो कि आत्मा से सीधा संस्पर्शित है। यह मन दो प्रकार का बतलाया है– द्रव्यमन और भावमन। द्रव्यमन तो पुद्गलात्मक होता है, भावमन विचारात्मक होता है। विचार स्फुलिंग एक तरह से आत्मा के ही पर्याय हैं। भीतर से उठने वाले ये स्फुलिंग, इन्सान को बाहर-भीतर प्रभावित करते हैं। जिस प्रकार घड़े के भीतर यदि पानी ठंडा हो तो बाहर ठंडापन लगेगा और यदि पानी के स्थान पर जलती हुई लकड़ी हो तो बाहर भी गर्माहट आए बिना नहीं रहेगी। इसलिए शास्त्रकारों ने कहा है– ''जहां अंतोतहा बाहिं'' इन्सान जैसा अन्दर में होता है वैसा ही बाहर भी आने लगता है। इसलिए बाहर को ठीक करने के लिए भीतर को ठीक करना आवश्यक है।

जो विचार व्यक्ति के भीतर में चल रहे हैं उसका शरीर पर किसी न किसी रूप में असर आए बिना नहीं रहता। भले कोई कितना ही विचारों को छिपाने का प्रयास या कोशिश करे फिर भी उसकी इन्द्रियों पर वे भाव उभर ही जाते हैं। बशर्ते कि सामने वाला इन्सान यदि बुद्धिमान हो तो स्पष्ट अनुमान लगा लेता है कि इसमें भीतर में क्या विचार चल रहे हैं।

यदि इन्सान को भीतर में क्रोध आ रहा है तो उसे वह कितना भी दबाने का प्रयास करे तो भी वह चेहरे पर किसी न किसी रूप में आ ही जाता है।

इसके लिए कषायों की परिभाषाएं सविस्तार जानना अपेक्षित है। इसके साथ ही गुरु गम से ज्ञान समझना जरुरी है। दवाएं कितनी भी हो पर डाक्टरी परामर्श, निर्देश आवश्यक है। वही स्थिति गुरु की है। पुस्तकीय ज्ञान कितना ही क्यों न हो तथापि उसे सही ढंग से समझने के लिए योग्य गुरु की आवश्यकता रहती है।

बाहर से भीतर के विचारों को समझने के लिए कई नीतिकारों ने भी कहा है–

आकारैइंगितैंगत्या, चेष्टया भाषणेन च।
नैत्रवक्त्र विकारेण, लक्ष्यतेन्तर्गतं मन:।।

इन्सान के बाहरी आकार, इंगित, संकेत, चेष्टा एवं बोलना तथा आँखों एवं चेहरे की क्रियाएँ संकेत से उसके भीतर के विचारों को समझा जा सकता है।

उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से भगवान महावीर ने गुरु के प्रति शिष्य के विनय को स्पष्ट करते हुए कहा है–

आणानिद्दस करे, गुरुण मुनवाए कारए।
इंगियागार संपन्ने, से विणिएत्ति वुच्चई।।

आज्ञा और निर्देश के अनुसार चलने वाला, गुरु के पास रहने वाला, इंगित और आकार से सम्पन्न साधक विनीत कहलाता है। बाहर के आँख, मुख और हाथ के ईशारे से समझने वाला विनीत शिष्य कहलाता है और कई बार बिना बाहरी हाथ, पैर, आँख आदि हिलाए गुरु के मन में उठने वाले विचारों को समझ जाता है, वह पूर्ण समर्पित विनीत शिष्य होता है। यह तभी संभव है जब गुरु शिष्य के मन में परस्पर पूरी तरह तदाकारता हो। जिस प्रकार माँ का बेटे के प्रति होता है। बेटा दस हजार कि० मी० दूर है, वहाँ भी अगर उसका ऐक्सीडेंट हो जाता है तो माँ का मन यहाँ उचट जाता है। वह बच्चे पर आये संकट को भांप जाती है। यह भीतर के इंगित/एक्शन हैं।

वासिलिएव एवं कामिनिएव ने इस संदर्भ में कई प्रयोग किये हैं। एक वैज्ञानिक कुछ चूहों को लेकर समुद्र की गहराइयों में गया। जहाँ पर वायु तरंगे/ध्वनि तरंगें भी नहीं पहुँच सके। ऊपर एक वैज्ञानिक उन चूहों की माँ के सिर पर इलेक्ट्रोड

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(Electrode) मशीन फिट करके बैठ गया। जिस-जिस समय पर नीचे वाले वैज्ञानिकों ने चूहों को मारा, ठीक उसी समय पर चुहिया माँ का दिल हिला ओर मशीन से उसके संकेत रूप ग्राफ्स बनते चले गए। जो कि चुहिया के भीतरी संकेतों को स्पष्ट कर रहे थे।

स्वर विज्ञान से भी बाहरी स्थिति को समझा जा सकता है। चन्द्रस्वर में नाक से श्वांस बाएं चलेगा। ऐसा कहा जाता है कि चन्द्रस्वर चल रहा हो तो सभी कामों, बाहर जाने आदि में सफलता का संकेत देता है। सूर्यस्वर के चलते विद्या-विवाद, विघ्न, अशान्ति आदि कार्यों के जीतने में सहयोग मिल सकता है। रात्रि में चन्द्रस्वर और दिन में सूर्यस्वर सही माना जाता है। चन्द्रस्वर में पूर्व उत्तर दिशा में जाना वर्जित है। सूर्यस्वर में दक्षिण पश्चिम में जाना वर्जित है। यदि कृष्ण पक्ष चल रहा हो तो सोम, बुध बृहस्पति को दिन में चन्द्रस्वर और मंगल, शनि को रात में भी सूर्य स्वर सही माना जाता है। ये दोनों स्वर साथ चलते हो तो कोई भी अच्छा काम करना मना किया है। ऐसा भी बतलाया जाता है कि यदि स्वर के अनुसार दिन नहीं है और काम करना जरूरी है तो जिस तरफ का सुर चल रहा है, उस तरफ से पैर से साढ़े तीन कदम चलो। चन्द्र स्वर में बाएं से सूर्यस्वर में दाएं से साढ़े तीन कदम पैर वैसे ही चलने पर भी सही हो सकता है। यद्यपि अच्छा या बुरा निश्चय में तो आदमी के शुभाशुभ कर्म के उदय पर निर्भर है फिर भी इन संकेतों का अपनी जगह महत्वपूर्ण स्थान है। स्वर विज्ञान की तरह बाहरी आकार के रूप में रेखाएं भी है जो उसकी भीतरी स्थिति को स्पष्ट करती है। जैन शास्त्रों में बताया गया है कि तीर्थंकरों के शरीर पर १०८ उत्तम लक्षण होते हैं। शंख, कमल, गदा, स्वस्तिक कलश आदि जो उनके तीर्थंकरत्व को स्पष्ट करते हैं। पैर में पद्म रेख होती है।

एक बार भगवान महावीर कहीं जा रहे थे। उनके नंगे पैर मिट्टी में पड़ने से मिट्टी में पद्म रेख अंकित हो गई थी। उत्पल नाम के नेमितिक ने अनुमान लगाया कि यहाँ से जाने वाला निश्चित ही कोई महासमृद्धिशाली चक्रवर्ती होगा। मैं जाऊँ और उनसे कुछ न कुछ दक्षिणा प्राप्त करुँ। किन्तु जब वह आगे बढ़ा तो वहाँ एकदम अकिंचन भगवान महावीर को ध्यान करते हुए पाया। उसे देखकर विचार आया कि यह क्या बात हुई। ऐसी पद्म रेखा और फिर यह भिखारी हो नहीं सकता। लगता है शास्त्र झूठे हैं। नैमितिक खिन्न होकर अपने शास्त्र नदी में बहाने की तैयारी करने लगा। इतने में प्रभु की वन्दना करने के लिए इन्द्र आया। उसने उत्पल को समझाया कि तुम्हारे शास्त्र गलत नहीं है। यह तो चक्रवर्तियों के भी स्वामी हैं और स्वर्ग के ६४ इन्द्रों के वन्दनीय हैं इनकी समृद्धि का क्या कहना, तब उत्पल को समझ में आया। इन्द्र ने उसे सन्तुष्ट किया। इसी प्रकार ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती के पद्मरेख का भी वर्णन आता है। जिसे देखकर एक ब्राह्मण ने अनुमान लगा लिया था कि यह व्यक्ति भविष्य में निश्चय ही चक्रवर्ती बनेगा। इसलिए उसने अपनी कन्या की उसके साथ शादी कर दी। इस प्रकार रेखाएं भी भीतरी जीवन को कुछ अंशों में स्पष्ट करती है। लेकिन रेखा विज्ञान भी सही हो तब ना। लोग तो मस्तिष्क की रेखाओं को देखकर ही बहुत कुछ समझ जाते हैं। हर रेखा मस्तिष्क की उसके २० वर्ष के उम्र की प्रतीक बतलाते हैं। जितनी रेखाएं मस्तिष्क पर उभरेगी उतने २०-२० वर्ष जुड़ जाते हैं। मस्तिष्क रेखाओं के बारे में कहते हैं कि जिसके एकदम सीधी रेखाएं हो उसे तत्पर बुद्धिवाला और ईमानदार समझा जाता है। अधूरी रेखा वाले को अस्थिर, चापलूस समझा जाता है। छोटी-छोटी रेखाएं व्यापार आदि में असफलता की प्रतीक हैं। रेखा में आने वाला क्रास दुखदायी मृत्यु का सूचक है। प्लस निशान मिलनसार का सूचक है। एक में से एक रेखा का निकलना साहसहीन, ढुल-मुल नीति का परिचायक है और रेखा ऊँची-नीची चलती हो वह उस व्यक्ति की समृद्धिशालिता की परिचायक है। इसी प्रकार हाथ में भी जीवन रेखा, भाग्य रेखा, मस्तिष्क रेखा, हृदय रेखा आदि होती है। रेखा विज्ञान बहुत विस्तृत एवं गंभीर है। जिसको स्पष्ट एवं प्रामाणिक रूप में जानना आज के युग में बहुत मुश्किल है।

मृत्यु निकट है या दूर इस बात की जानकारी भी व्यक्ति के बाहरी चिह्नों से की जा सकती है। स्थानांग सूत्र के पांचवें ठाणे में कौन आत्मा, शरीर के किस अंग से निकलकर कहाँ जाती है। यह बतलाया है। नाक, कान, आँख मस्तिष्क आदि ग्रीवागर्दन के ऊपर से जिसका प्राण निकलता है उसके लिए देवलोक गमन बतलाया है। गर्दन के नीचे छाती, पीठ, नाक से श्वांस निकलने पर मनुष्य गति में जाना बतलाया है। नाभि के नीचे घुटने तक में से किसी भी अंग से श्वांस निकलने पर तिर्यंच गति में जाना बतलाया है। घुटने में पैर आदि से प्राण निकल जाय तो नरकगति में जाता है। जो आत्म-प्रदेश शरीर के सारे अंगों से निकलते हैं तब उसका मोक्ष होना बतलाया गया है। इसकी जानकारी अनुभवी व्यक्ति बाहरी श्वांस को देखकर लगा सकता है।

कुछ लोग शरीर के बाहरी चिह्नों को देखकर उसकी मृत्यु का अन्दाज भी लगाते हैं। स्वयं को स्वयं की भौंहे, नाक का अग्रभाग जिह्वा का अग्रभाग दिखलाई न दे तो दो दिन में मृत्यु होने का संकेत मिलता है। स्नान करने के बाद सारा शरीर भीगा और यदि मुंह पहले सूख जाय तो १५ दिन में उसकी मृत्यु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बतलाई गई है। कानों की कूपर पतली हो जाय, नाक की डंडी टेढी हो जाय, आँख सफेद हो जाय, नासिका लाल, कपाल काला हो जाय, मुख के बाल खिरने लगे, होठ सफेद हो जाय तो ३ दिन में मृत्यु की संभावना बतलाई है। भोजन पानी स्वाद न लगे। नाक के श्लेष्म की गंध दूध जैसी हो, छाती की दाहिनी ओर धड़कन बढ़ जाय। हाथ पैर के तलवे लाल हो जांय। नाखून काले पड़ जायें। शरीर की गंध शव जैसी हो जाय, नाड़ी सुस्त हो जाय, क्रोध बढ़ जाय, विनम्रता या मूर्च्छा बढ़ जाये। छाती पीली, जंघा श्वेत, गला नीला या लाल दिखाई दे। नाक पर सल पड़ जाए। हाथ-पैर ठंडे हो जाय और मस्तक गर्म रहे तो मृत्यु होना एकदम निकट बतलाया है।

शरीर के अंगों का स्वाभाविक वर्ण बदल जाय। मांस, वसा आदि नर्म अंग कड़े हो जाय। अचल अंग चल और चल अंग अचल हो जाय। आंखें घूम जाय, मस्तिष्क लटक जाय, जोड़ ढीले पड़ जाय, आँखें या जीभ भीतर घूम जाय तो भी मृत्यु को निकट जानो। आधा शरीर गर्म और आधा शरीर ठंडा पड़ जाय तो सात दिन में मृत्यु की संभावना कही गई है। इस प्रकार अनुभवियों ने अपने-अपने ढंग से मृत्यु की निकटता का बोध बाहरी अंगों से किया है। वैसे सिद्धान्तवादियों ने देवताओं के लिए भी बतलाया है कि च्यवन मरने से ६ महिने पहले देवताओं की फूलमाला मुर्झा जाती है जो उनकी मृत्यु को बतलाती है। कालिया कसाई के लिए भी बतलाया गया कि वह सातवीं नरक में जाने वाला था। जाने से पहले उसे घोर वेदना हो रही थी। उसके बेटे सुलभ ने उसके दाह ज्वर को शान्त करने के लिए बावना चन्दन का लेप करवाया। फिर भी कुछ नहीं हुआ। तब अभय कुमार के कहने पर उस पर अशुचि का लेप किया। गर्म-गर्म शीशा पिलवाया। कर्ण भेद आवाजें सुनवाई जो उसे प्यारी लगने लगी। इसका कारण स्पष्ट करते हुए अभय कुमार ने कहा कि यह ७वीं नरक में जाने वाला जीव है। अत: वहाँ जो चीजें अच्छी लगने वाली है वे अभी से अच्छी लगने लगी है। शास्त्रकार भी कहते हैं कि जिस गति में जो जानेवाला है, उस सम्बन्धी आनुपूर्वी का उदय यहीं पर होने लग जाता है। जाने से पहले गति के अनुरूप ही उसकी विचार-धारा भी बन जाती है। जो उसकी होने वाली गति का संकेत देती है।

कई बार पुराने व्यक्ति छींकने, खांसने, उबासी लेने से भी सम्बन्धित फलाफल का विचार करने लगते हैं। उनका मानना है कि जो छींक, सर्दी, जुखाम या किसी बीमारी के कारण न आकर अगर सहज में आई है इसके पीछे भी कोई कारण है क्योंकि बिना कारण कोई काम नहीं होता। इसलिए छींक भी बहुत कुछ स्पष्ट करती बतलाती है। अनुभवी लोग यों कहते पाए जाते हें।

छींक पीठ की कुशल उच्चारे, बायी छींक कारज सब सादे।
सम्मुख छींक लड़ाई भाखे, छींक दाहिनि द्रव्य विनाशे।''
ऊपरी छींक सदा जय कारी, नीची छींक महाभयकारी।
अपनी छींक महादु:ख दाई, ऐसे छींक विचारों भाई।

यह छींकों का स्पष्टीकरण अपने ढंग का दिया गया है। वैसे यह कोई जरूरी नहीं कि ऐसा ही हो।

एक बार हमें बंबई से विहार का संकेत मिला। आचार्य प्रवर ने चातुर्मास की घोषणा हमारे लिए रतलाम की कर दी। इतने में एक भाई ने छींक कर दी। हमने कहा- अब देखो क्या होता है। छींक तो हो गई। काम चलता रहा। बालकेश्वर से घाटकोपर तक रतलाम के लिए विहार हो गया। लेकिन पता नहीं क्या हुआ कि आचार्य प्रवर ने अचानक वापस बुलाया। हम लोग घाटकोपर से सीधे २२ कि०मी० करीब चलकर पुन: बालकश्वेर पहुंचे। आचार्य प्रवर से बुलाने का कारण पूछा वे बोले– तुम्हें अभी भेजने की लिए मेरी अन्तर आत्मा नहीं मानती। यहाँ भी तुम्हारी आवश्यकता है। मैंने कहा– ठीक है आपने ही खोला है चातुर्मास और आप बदल लीजिये और वह चातुर्मास बदल दिया गया। चातुर्मास, गुरुदेव के साथ घाटकोपर ही हुआ। कभी-कभी काकतालीय दृष्टि से समझें या सच। छींक का परिणाम ऐसा भी देखने को मिलता है।

कई बार आदमी ज्योतिष रेखाशास्त्र आदि में उलझ जाता है और अपने विलपावर (Will power) को कमजोर कर देता है। जबकि इन सबसे ऊपर आत्मा का विलपावर स्ट्रोंग (Strong) होना ही सफलता का परिचायक है।

कई लोग शकुन के चक्कर में भी रहते हैं कि घर से निकले तब शकुन देखकर निकला जाय। कहीं बिल्ली रास्ता तो नहीं काट रही है। ऐसी कई धारणाएं लोगों के दिमागों में घूमती रहती हैं। कहते हैं शकुनी चिड़ियाँ छ: माह पहले भूकम्प वाले स्थान को छोड़कर चली जाती है। जिस बात को वैज्ञानिक कभी-कभी तो एक दिन पहले भी नहीं जान पाते। हमने भी दिल्ली में कुछ सेकेण्ड का चला भयंकर भूकम्प से हिलते मकानों का अनुभव किया था। शकुन विचार सही है या नहीं, यह स्वतन्त्र रूप से समीक्षा का विषय है। भड्डुरी द्वारा प्रचलित शकुन पर लोगों का भारी विश्वास देखा जाता है। जैसा कि कहा गया है–

गौन समे जो अपशकुन, ते आवत सुखदाय।
गौन समे जो शुभ शकुन, फर पैठत दु:खदाय।।
शकुन शुभाशुभ जानि निकट, हो हितो निकट कल।
दूर सो दूर बखान, कहे भड्डुरी सहदेवल।।

अर्थात् अंगार, शंख, लकड़ियाँ, रस्सी, कर्दमा, खल, कपास, तुष, हड्डी, केश, यवधान्य, कूड़ा-करकट, तृण, छाछ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अर्गला, बिन ऋतु की वर्षा, प्रतिकूल वायु आदि के रहते यात्रा के लिए प्रस्थान शुभ नहीं माना जाता है।

ऐसा भी बतलाया जाता है कि यात्रा करते समय जल से भरा घड़ा लिये कोई सौभाग्यवती स्त्री मिल जाय। गाय बछड़े को दूध पिलाती मिल जाय तो अच्छे शकुन समझे जाते हैं। यदि यात्रा चल रही हो और रास्ते में बार-बार लोमड़ी दिखाई दे। बांयी ओर से दायी ओर हिरण आता दिखे तो ये सभी लक्षण कार्य में सिद्धि देने वाले होते हैं। सोम और शनि को पूर्व दिशा में मंगल बुध को उत्तर दिशा में बृहस्पति को दक्षिण दिशा में यात्रा करने का मना किया जाता है। यात्रा करते समय कुत्ता कान फड़फड़ा दे या धरती पर लौटता दिखे तो भी अशुभ कारक माना गया है। यदि राह में नेवला मिल जाय, बांयी तरफ पक्षी चुगा लेते दिख जाय तो कार्य सिद्धि के परिचायक माने गए हैं। दस व्यक्तियों का यात्रा में साथ होना भी विघ्न का संकेत देता है। बिल्लियों का युद्ध यात्रा में प्रतिबंधक है। गधा बांया और सर्प दायीं दिशा में यात्रा में मिले तो उचित ठहराया जाता है। इस प्रकार विभिन्न प्रकार से शकुन-अपशकुन का विचार भड्डुरी शास्त्र के माध्यम से मिलता है।

अवन्ति देश में तुम्बवन नामक नगर के धनगिरि नामक सद्गृहस्थ ने अपनी सगर्भा पत्नी को छोड़कर आर्य सिंहगिरी के पास दीक्षा ले ली थी। यह घटना वीर निर्वाण के ४९६ वर्ष बाद की बतलाते हैं। वे जब विचरण करते हुए पुन: तुम्बवन पधारे और भिक्षा के लिए जाने लगे तो कहते हें कि उनके आचार्य श्री ने बाहरी शकुन लक्षणों का विचार करके अपने शिष्यों को यहाँ तक कहा था कि आज भिक्षा में जो भी सचित अचित मिल जाय उसे ले आना और वे गए। इधर उनकी संसारपक्षीय पत्नी ने बच्चे को जन्म दिया था, वह रोता ही रहता था। छ: महिने तक खूब रोया। इधर महाराज को अपने घर आया देखकर उस महिला ने वह बच्चा महाराज के पात्र में बहरा दिया। उसका रोना बन्द हो गया। महाराज धनगिरी बच्चे को आचार्य महाराज के पास लाए। उसके पालन-पोषण की व्यवस्था संघ ने की। भविष्य में वही बच्चा व्रजस्वामी के नाम से महान प्रभावक आचार्य हुए। इस घटना से स्पष्ट होता है कि शकुन तो माने जाते हैं पर शकुन की सच्चाई को नापना जरूरी है।

वीर निर्वाण के ६०० वर्ष बाद भयंकर दुष्काल पड़ा था, लोग मर रहे थे। उस समय व्रजस्वामी ने अपने शिष्य व्रजसेन से कहा था कि जिस दिन एक सेठ एक लाख स्वर्ण मुद्रा में एक मुट्ठी चावल खरीदकर विष खाकर मरने की तैयारी करता पाया जाय, वही दुष्काल का अन्तिम दिन होगा। हुआ भी यों ही। जिनदत्त सेठ, उनकी पत्नी ईश्वरी ओर उनके चार बच्चे नागेन्द्र, निवृत्ति, चन्द्र और विद्याधर भूख से परेशान ऐसा ही करने जा रहे थे वज्रसेन मुनि ने देखकर रोका और दूसरे दिन से ही सुकाल की स्थिति बन गई।

अंग फड़कना भी बाहरी आकार है। इसमें भी भविष्य के संकेत मिलते हैं। स्त्री का बायाँ और पुरुष का दायाँ अंग फड़कना सही माना गया है। कहते हैं मस्तिष्क के फड़कने से जमीन की प्राप्ति होती है। ललाट प्रदेश के स्फुरण से स्थान और सफलता की प्राप्ति होती है। आँख की भौंहे और नासिक के मध्य भाग में फड़कने से आत्मीय व्यक्ति के मिलने की संभावना बतलाई गई है। नाक और आँखों के मध्य में स्फुरण होने पर मुसीबत में सहायता, धन आदि के प्राप्ति का संकेत होता है। आँखों के अन्तिम भाग में या कंठ के नीचे फड़कन हो रही है तो भी धन लाभ संकेत है। दाहिनी आँख के नीचे फड़क रहा है तो शत्रु बाधा से पीड़ित रह सकते हैं। कान का फड़कना अच्छी बात सुनने का संकेत है। होंठ, कंधा गले में स्फुरण होने पर मुख, प्रसन्नता, संतोष सुविधाएँ आने की स्थिति में भुजा के स्फुरण होने पर प्रियवस्तु मिलने वाली है। हाथ के स्पंदन से सम्पति, पराक्रम की प्राप्ति होती है। रीढ़ का फड़कना पराजय का प्रतीक है। अत: उस समय महत्वपूर्ण काम नहीं किया जाय। कमर का स्फुरण भारी कामों में सफलता का सूचक है।

इस प्रकार अंगों के स्फुरण से भी अच्छे बुरे संकेत का अन्दाज लोगों द्वारा लगाया जाता है। वर्तमान में वैज्ञानिक में बाहरी वस्तुओं पर ही विशेष रूप से आधारित रहने वाला इन्सान इन सबका अनुभूतिपरक प्रामाणिक ज्ञान नहीं कर पा सकने के कारण भी वह इन सब अवस्थाओं के ज्ञान से वंचित रह गया है। अन्यथा भड्डुरी के ज्ञान से तो अनेक महत्वपूर्ण अवस्थाओं का ज्ञान किया जाता रहा है।

भड्डुरी कौन हुई और यह ज्ञान कैसे क्या प्रचारित हुआ इसके पीछे भी एक रोचक तथ्य है।

घाघ नामक ज्योतिषी राजस्थान में जन्मे थे। परन्तु विद्वता के अनुरूप यहाँ पूरा सम्मान नहीं मिल पाया। तब वे वहाँ से निकलकर मध्यप्रदेश में धारानगरी चले गए। राजा भोज ने उन्हं उपयुक्त समझकर राज ज्योतिषी बना दिया। इस पर स्थानीय लोगों को ईर्ष्या भी हुई पर इससे क्या हो। राजा माने जो राणी और भरे पाणी। ज्योतिषी घाघ बड़े ठाठ-बाट के साथ रह रहे थे। उस वक्त एक घटना घटती है। जो उनके जीवन में एक विशिष्ट परिवर्तन लाने वाली बनी। राज्य में एक वर्ष अकाल के लक्षण दिखलाई देने लगे। दूर-दूर तक पानी होने की संभावना ही नजर नहीं आ रही थी। यह देख राजा भोज विचार में पड़ गए, तुरन्त सारे ज्योतिषियों को एकत्रित किया और पूछा कि इस वर्ष पानी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का योग है भी या नहीं। घाघ को छोड़कर सारे ज्योतिषियों ने ज्योतिष के पन्ने देखकर बतलाया कि तीन वर्ष तक इस प्रान्त में पानी का योग नहीं है। राजा भोज बहुत निराश हुए, उन्होंने घाघ से भी पूछा। अब तक घाघ चुपचाप बैठे थे। उन्हें अपनी ज्योतिष की गणना के अनुसार वर्षा का योग दिखलाई दे रहा था। पर जब सारे ज्योतिषी मना कर रहे थे तब वे भी विचार में पड़ गए और एक बार फिर अपना ज्योतिष मिलाने लगे। उन्होंने कहा ज्योतिष के अनुसार तो योग है। पर जब सब मना कर रहे थे तो अपनी बात को पुष्ट करने के लिए वर्षा से सम्बन्धित पशु-पक्षियों की चाल भी देख लेना चाहिये। यही सब सोचकर घाघ ज्योतिषी ने राजा को कहा– राजन, इस प्रश्न का जबाब कल दूंगा। राजा मान गए- उन्होंने एक दिन का समय दे दिया।

घाघ जंगल में गए। वहाँ पर उन्होंने एक गधे को देखा। जिसके कान लटके हुए थे। वे कुछ और आगे बढ़े तो देखा चिंटियों के दल के दल मुंह में अन्न के दाने लिए बिलों के भीतर भाग रहे हैं। चिड़िया धूल-मिट्टी में स्नान कर रही है। वह सब उन्हें आसन्न निकट में ही वर्षा होने का संकेत दे रहे थे और आगे बढ़ने पर देखा कि आकाश में चीलों का एक समूह वृताकार-गोलाकार ऊपर उठता हुआ जा रहा था। यह सब वर्षा के योग की सूचना दे रहे थे। घाघ और आगे बढ़े। उन्हें एक नाला दिखाई दिया। जिसके इस पार एक महत्तर-हरिजन की लड़की अपने पशु चरा रही थी और दूसरी पार उसके पिता सुअरों को चरा रहे थे। लड़की ने पुकारा बापा बापा! जल्दी लौट आ, आज रात को बड़े जोर से पानी आने वाला है। उसके बाद नाले में पानी भर जाने पर सुअर नाला पार नहीं कर पाएंगे। तब उसके बापा ने पूछा, यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

लड़की बोली बापा! नाले में टिटहरी ने अंडे दे रखे हैं। वह घबराई हुई है और जोरों से आवाज करती हुई अंडों को उठाकर दूसरी जगह सुरक्षित स्थान पर रख रही है। इससे स्पष्ट हो रहा है कि वर्षा जल्दी ही आज रात तक आ जाने वाली है। लड़की का नाम था भड्डुरी! उसके इस विश्लेषण को सुनकर घाघ ज्योतिषी अवाक् रह गए। उन्हें वर्षा आने का पक्का विश्वास हो गया और वे तुरन्त घारा नगरी लौटे। राजसभा में राजा एवं उपस्थित सारे ज्योतिषियों के सामने घोषणा की कि वर्षा निश्चित रूप से होगी। आने वाले आठ पहर याने चौबीस घंटे में मूसलाधार वर्षा होने की संभावना है। सूर्य को प्रचण्डता के साथ तपते हुए देखकर किसी को इस बात पर विश्वास नहीं हो रहा था। तब तक बादल की एक टुकड़ी भी नजर नहीं आ रही थी। लोगों ने पूछा इसका क्या प्रमाण है। ज्योतिषी घाघ ने कहा घाघा का वचन ही प्रमाण है। आगे आने वाले २४ घंटे का इन्तजार किया जाय। सभा विसर्जित हो गई। सभी अगले पल का इन्तजार करने लगे। घाघ भी अपने शयन कक्ष में बादलों की ओर दृष्टि गड़ाए सो गए। रात्रि की प्रथम पहर बीत जाने तक आकाश एकदम साफ था। लेकिन रात्रि की १० बजे बाद बादल की एक टुकड़ी दिखलाई दी और कुछ ही देर में रिमझिम रिमझिम वर्षा होने लगी। कुछ और समय बीत जाने के बाद तो घनघोर बादल छा गए, बिजलियाँ चमकने लगी। बादल गर्जने लगे और मूसलाधार वर्षा हुई। मानो जल-थल एकाकार हो गया। सभी लोग घाघ के वाक्य से आश्चर्य चकित थे। सबेरा होते-होते तो घाघ के मकान के सामने भारी भीड़ एकत्रित हो गई। सभी घाघ की जय-जयकार कर रहे थे। सभी को घाघ की वाणी पर अचूक विश्वास हो गया था। राजा भोज ने घाघ की ज्योतिषी की सर्वोच्च उपाधि से विभूषित किया। अब तो ईर्ष्यालु भी घाघ का लोहा मान गए।

ज्योतिषी घाघ को लगा कि महत्तर की लड़की भड्डुरी यद्यपि निम्न कुलोत्पन्न है फिर भी बाहर के संकेतों से होने वाली घटनाओं का उसे अद्भुत ज्ञान है। जानकारी करने पर पता चला उसे शकुन-अपशकुन आदि अनेक बातों का भी जबर्दस्त ज्ञान है। घाघ ने सोचा- कीचड़ में भी कमल खिला है और पत्थरों में हीरा मिल रहा है उसे उठा लेना चाहिये। क्यों न भड्डुरी से शादी ही कर ली जाए। शकुन आदि देखने में उसका भारी सहयोग मिलेगा। घाघ ने भड्डुरी की मांग उसके पिता से की। पहले तो उन्होंने मना कर दिया। परन्तु बार-बार मांग करने पर उन्होंने अपनी पंचायत बुलाकर यह बात रखी। तब पंचायत में लोगों ने घाघ से कहा कि भड्डुरी से शादी करने पर तुम्हें ब्राह्मण समाज से निकाल दे, यही नहीं राजा, राज ज्योतिष का पद वापस ले ले तो भी तो आप भड्डुरी को नहीं त्याग सकोगे। घाघ ने यह बात मंजूर की तब भड्डुरी का विवाह उसके साथ कर दिया गया। उन दोनों से मिलकर जो सन्तान पैदा हुई, वह डाकोत कहलाई। कहा जाता है कि आज डाकोत जाति के लोग घाघ भड्डुरी की ही सन्तान हैं।

इसके साथ ही शरीर के बाहरी आकार भी भीतरी संकेतों को स्पष्ट करने वाले बनते चले जाते हैं। जिस प्रकार वाणी दुनियाँ को समझाने में काम आती है उसी प्रकार शरीर के एक्शन भी लोगों को उसकी मानसिकता समझाने वाले बनते हैं। जिसे आज भी भाषा में बॉडी लेग्वेंज के रूप में माना जाता है। इन्सान की बॉडी-शरीर भी एक भाषा का काम करती है।

सन् १८७२ में एलबर्ट ने बतलाया कि व्यक्ति के बोलने का प्रभाव ७ प्रतिशत पड़ता है। २८ प्रतिशत लहजे का और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५५ प्रतिशत भाव उसके संकेतों का होता है। चार्ली चेपलीन ने भी इस बात को विस्तृत समझाया। सन् १९६० में ज्यूलियस ने इसे और आगे बढ़ाकर संकेतों के अर्थ को व्यवस्थित रूप से प्रतिष्ठापित किया।

जैनागमों में बॉडी लेग्वेंज को अपने ढ़ंग से अच्छे तरीके से समझाया है। यही नहीं जैन शास्त्रों में मन के एक्शन को भी समझाया है। जैसे किसी व्यक्ति को धीरे से कहा जाय कि यह काम तुम्हें करना है और यही बात तेज शब्दों में कहा जाय कि यह काम तुम्हें ही करना है तो सामने वाले के समझने में भारी फर्क आ जाता है। रेडियो से टी०वी० देखने में व्यक्ति को ज्यादा अच्छा समझ में आता है क्योंकि उसमें आवाज और लहजे के साथ ही एक्शन भी साफ नजर आते हैं। णमोत्थुणं में बायां घुटना खड़ा करवाया जाता है जो विनम्रता का प्रतीक है और गौतम स्वामी आदि जब प्रश्न पूछते थे, तब ऐसे ही बैठते थे। परन्तु जब श्रमण प्रतिक्रमण का पाठ किया जाता है दांया घुटना खड़ा करवाया जाता है। यह वीरता का परिचायक है। अर्थात् लिये हुए व्रतों को दृढ़ता के साथ पालन करने का सूचक है। यही स्थिति व्यावहारिक जीवन में भी बतलाते हैं कि जब बन्दूक चलाई जाती है तो राइट का घुटना आगे खड़ा किया जाता है। जिससे सीना तन जाता है। तभी वह सधे हुए हाथों से गोली चलाता है। अति विशिष्ट व्यक्ति के कक्ष में जब कोई व्यक्ति जाता है। जिसके मन में सामने वाले व्यक्ति के प्रति पूरा सम्मान हो तो कक्ष में वह प्रवेश करेगा तो उसका स्वत: ही बांया पैर पहले प्रवेश करेगा। यदि सम्मान की भावना कम हो तो फिर दायां पैर पहले जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति कुर्सी पर बैठा है। वह बैठा-बैठा ही पैर पर पैर को चढ़ा देता है तो ऊपर वाले पैर का अंगूठा जिस तरफ गया है समझना चाहिये उस व्यक्ति को बोलने का कार्य उधर की तरफ बैठे व्यक्तियों की तरफ है। जब वह पैर बदलता है तो जिधर पैर को चढ़ाया है अब वह उधर ही बात करना चाहता है। यह शरीर का संकेत है। चपरासी जब भी अफसर के पास जाता है, तो ज्यादातर वह उसके बांयी तरफ ही आकर खड़ा होता है। किसी अफसर से काम करवाना हो तो उसके सामने नहीं बैठें। उसकी दायें तरफ न बैठें। ऐसा बैठने पर हो सकता है काम न हो। क्योंकि सामने बैठने पर अफसर के मस्तिष्क में अदृश्य रूप में ऐसा लगता है कि यह उसका प्रतिस्पर्धी है। दांयी और बैठने पर भी यही स्थिति हैं। बांयी और बैठना विनय का सूचक है। बांयी तरफ बैठे व्यक्ति पर सामने वाले का साफ्ट कार्नर बन सकता है। क्योंकि वह विनय का परिचायक है। भीतरी ऊर्जा का बांयी और झुकाव होने से उधर प्रवाहित हो जाती है। जब दो तीन व्यक्ति खड़े बात कर रहे हों तो बोलने वाले के पैर पर अंगूठा जिधर है वह उस व्यक्ति से बात करने की इच्छा वाला बन जाता है।

सदियों से भारतीय संस्कृति में हाथ उठाकर हथेली सामने करते हुए आशीर्वाद देने की प्रक्रिया अपनाई जाती है। यह भीतरी निर्मलता, सादगी, सरलता का प्रतीक है। यही स्थिति व्यावहारिक जीवन में भी देखी जा सकती है। जब कोई व्यक्ति किसी का सम्मान करता है तो वह दोनों हाथ खोलकर हथेलियां उसके सामने घुमाता हुआ पधारो-सा बोलता है। यह सम्मान का परिचायक है। यदि भीतर में सामने वाले के प्रति सम्मान नहीं हो तो वह ऐसा एक्शन न करके अंगुली से इशारा करता हुआ बोलेगा। इधर आ, उधर आ। जिससे लग जायेगा कि सामने वाले के प्रति सम्मान की भावना नहीं है। कोई उग्रवादी समर्पित होता है तो वह भी दोनों हाथ ऊपर रखकर हथेलियां सामने कर देता है कि अब मै खाली हूँ। कोई खोट नहीं है। भीतर में यदि कोई व्यक्ति झूठ बोल रहा है या सच। तब सामनेवाले के हाथ का एक्शन देखिये। यदि वह दोनों हाथ थोड़ा ऊपर उठाकर ऐसा करता है कि सच मानिये। मैं जो भी कर रहा हूँ वह सच कर रहा हूँ। यदि सामने वाला ऐसा न करके दाढ़ी पर हाथ फिराएगा या कान या फिर सिर पर खुजली करने लगता है या नाक के नीचे एक अंगुली घुमाता है आदि करे तो साफ है कि वह झूठ बोल रहा है, क्योंकि यह सब सोचने के आकार हैं। सच बोलने वाले को सोचना नहीं पड़ता। वह साफ है। विकल्प झूठ में ही उठते हैं।

सदियों से यह परम्परा है कि आदेश देने वाले ऋषि महर्षि श्रोताओं से कुछ ऊपर बैठते हैं। ऊपर से विचार-तरंगे नीचे की तरफ प्रवाहित होती है जो श्रोता को प्रभावित करती है। इसी प्रकार बॉडी लेग्वेंज में भी यह बतलाया जाता है कि सेल्समैन की कुर्सी ऊपर और खरीददार की नीचे हो तो सेल्समेन जो चीज जितने में बेचना चाहेगा ज्यादा संभावना होगी कि उसमें कोई मोल भाव नहीं होगा और वह उतने में ले ही लेगा। यदि बेचने वाले का आसन कुर्सी नीचे होगा और वह उतने में ले ही लेगा। यदि बेचने वाले का आसन कुर्सी नीचे है और खरीदने वाले की ऊपर है तो ज्यादातर संभावना यह है कि मोलभाव होगा और उसमें खरीदने वाले की इच्छा ज्यादा महत्वपूर्ण बनती चली जाएगी। क्योंकि ऊर्जा तरंगों का दबाव, ऊपर से नीचे की ओर आता है। इसलिए ज्यादातर दुकानों पर सेठ की गद्दी थोड़ी ऊपर होती है। लेने वाले को भले डनल्प के गद्दे पर बिठा देंगे पर उसका स्थान थोड़ा नीचे ही रहेगा ताकि देने वाले की ऊर्जा उस पर असर करे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोई आदमी नीची गर्दन करके बोलता है तो समझ लीजिये यह अपराधी है या लज्जावान है। हाथ मिलाते वक्त भी कोई मजबूती से पकड़ता है और कोई ढीला। जो ज्यादा मिलने वाला है, उसका हाथ कड़ा पकड़ लेते हैं जो कम मिलने वाला है, उसका ढ़ीला पकड़ लेते हैं। याने कि जिस व्यक्ति में आपका इन्ट्रेस्ट ज्यादा है उसका हाथ कसकर पकड़ लेते हैं। जिससे इन्ट्रेस्ट कम है उसे ढीला पकड़ेंगे।

सैनिक हमेशा हाथ मजबूती से पकड़ता है। उसका कारण अलग है। क्योंकि वह बतलाता है कि मैं इज्जत से, शरीर से चरित्र से, मजबूत हूँ। कई बार सामने वाले के प्रति ज्यादा उत्सुक व्यक्ति अपने दोनों हाथ आगे करता है और सामने वाले की उत्सुकता उसमें नहीं है तो वह औपचारिकता निभाने के लिए अपना एक हाथ ढीले तरीके से आगे बढ़ा देता है। जिसे वह व्यक्ति दोनों हाथों से दबाता है तो स्पष्ट है कि हाथों से दबाने वाला सामने वाले को कुछ कहना चाहता है, उससे कुछ काम करवाना चाहता है चापलूसी करके। कई बार आदमी किसी को अंगूठा दिखाकर हिलाता है तो उसे टकराने का संकेत देता है और यदि तना हुआ अंगूठा खड़ा रखता है तो वह उसके आत्मविश्वास का परिचायक है। कोई प्रवचन दे रहा है और आप कड़क से बैठे हैं तो लगेगा आप सुनने को इच्छुक हैं और यदि ढीले-ढाले बैठे हैं तो लगेगा कि आप सुनना नहीं चाहते हैं। यदि कोई किसी से निकटता से बात कर रहा है तो लगेगा कि वह आपका कोई अनन्य मित्र है, सम्बन्धी है। इस प्रकार शरीर, हाथ पैर, आँख कान के ईशारे ऐसे होते हें, जिससे व्यक्ति के मनोगत भाव समझे जा सकते हैं। कई बार केवल आँखें ही विभिन्न रूपों में व्यक्ति की मानसिकता का संकेत दे देती है कि वह आपके प्रति क्या रूख रखता है, घृणा, क्रोध, प्रेम आदि अनेक बातें केवल आंखें ही बता देती हैं। वैद्य नाड़ी के बदलते रूप को देखकर बीमारी का अनुमान लगा लेता है, यह भी एक स्वतन्त्र विषय है।

इसलिए साधु को विनय के लक्षण में ''इंगियागा संपन्ने'' इंगित और आकार में संपन्न होना बतलाया है। जब वह गुरु के इंगितों को समझने में दक्ष हो जाएगा तो वह अन्य व्यक्तियों के इंगितों को समझने में भी दक्ष हो जाएगा। ऐसा व्यक्ति संयम के साथ हित में प्रवृत्ति और अहित से निवृत्ति ले सकता है। शास्त्रों में हत्थ संजए, पाय संजए आदि विशेषण भी आए हैं। वे हाथ संयम, पैर संयम, इन्द्रिय संयम, वाक्-वचन संयम आदि का संकेत करते हैं। इसलिए कि तुम्हारे अंग-प्रत्यंग भी आस्रव कर्मबन्धन की ओर नहीं जाने चाहिये।

जैन शास्त्रों में बाहरी संकेतों का गहरा विश्लेषण मिलता है। यदि हम आज के स्वर विज्ञान, रेखा विज्ञान, शकुन विज्ञान, नाड़ी विज्ञान तथा शास्त्रीय धरातल की स्थिति को सामने रखते हुए क्षीर नीर विवेकिनी बुद्धि के अनुसार कार्य करते हैं तो लक्ष्यानुरूप सफलता प्राप्त कर सकते हैं। काया, वचन और मन के संकेतों को संयम के अनुरूप बनाने का प्रयास किया जाय तो अन्तरंग शक्ति का जागरण हो सकता है। बाहर से भी संयमी आचरण को मजबूती के साथ अपनाया जाता है तो धीरे-धीरे वह अन्तरंग को छूता चला जाता है। जब इंजन चाबी से नहीं चलता है तो बाहर से हैण्डल (Handle) घुमाकर चलाया जाता है। जब अन्दर का इंजन चालू हो जाय ता हेण्डल निकाल लिया जाता है। उसी प्रकार अन्तरंग स्थिति को उज्ज्वल बनाने के लिए बाहर से भी पूरी तरह से संयम बरतने वाला व्यक्ति पवित्रता को पा जाता है।

■

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org